उद्देश्य और आत्मिक सतर्कता के साथ नए वर्ष की शुरुआत करें

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पवित्र और धन्य नाम में आप सभी को नमस्कार। जैसे ही हम एक नए वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, यह आवश्यक है कि हम ठहरकर आत्म-परीक्षण करें—सिर्फ अपने लक्ष्यों पर ही नहीं, बल्कि उस आत्मिक मनोभाव पर भी, जिसके साथ हम इस नए वर्ष की शुरुआत कर रहे हैं।

पवित्रशास्त्र में सबसे गंभीर और चेतावनी देने वाली घटनाओं में से एक है राजा दाऊद का बतशेबा के साथ पाप में गिरना। यद्यपि दाऊद को “परमेश्वर के मन के अनुसार मनुष्य” कहा गया है (प्रेरितों के काम 13:22), फिर भी वह प्रलोभन से अछूता नहीं था। उसके गलत निर्णयों के परिणाम अत्यंत दुखद सिद्ध हुए—न केवल उसके लिए, बल्कि उसके आसपास के लोगों के लिए भी। और यह सब एक ऐसे छोटे निर्णय से शुरू हुआ, जो ऊपर से देखने में बहुत साधारण और हानिरहित लगता था।

2 शमूएल 11:1 में लिखा है:

“वर्ष के बदलने पर, उस समय जब राजा लोग युद्ध करने जाते थे,
दाऊद ने योआब को अपने सेवकों और सारे इस्राएल के साथ भेज
दिया। उन्होंने अम्मोनियों को नष्ट किया और रब्बा को घेर लिया, परन्तु दाऊद यरूशलेम में ही रह गया।”

उद्देश्य और आत्मिक सतर्कता के साथ नए वर्ष की शुरुआत करें

यही एक वाक्य दाऊद के पतन की पृष्ठभूमि तैयार करता है। यह वह समय था जब राजा युद्ध में जाते थे—पर दाऊद घर पर ही रह गया। जब उसकी सेना युद्ध में व्यस्त थी, तब दाऊद निष्क्रिय और लापरवाह था। आत्मिक निष्क्रियता का यही क्षण प्रलोभन के लिए खुला द्वार बन गया।

पद 2 से 5 में हम देखते हैं कि दाऊद ने बतशेबा को देखा, उसके विषय में पूछताछ की, और अंत में उसके साथ व्यभिचार किया। जब वह गर्भवती हुई, तो दाऊद ने अपने पाप को छिपाने का प्रयास किया। और जब वह प्रयास असफल हुआ, तो उसने उसके पति ऊरियाह को मरवा दिया। वर्ष की शुरुआत में लिया गया एक गलत निर्णय पापों की एक ऐसी श्रृंखला में बदल गया, जिसने गहरा दुःख और लंबे समय तक रहने वाले परिणाम उत्पन्न किए (2 शमूएल 12:10–14)।

यह घटना हमें एक गहरा आत्मिक सत्य सिखाती है:
आत्मिक निष्क्रियता, आत्मिक असुरक्षा को जन्म देती है।

इसी सत्य को प्रेरित पौलुस इफिसियों 6:11–13 में स्पष्ट करता है:

“परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो, ताकि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको… इस कारण परमेश्वर के सारे

उद्देश्य और आत्मिक सतर्कता के साथ नए वर्ष की शुरुआत करें

हथियार बाँध लो, ताकि तुम बुरे दिन में सामना कर सको और सब
कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।”

नए वर्ष की शुरुआत केवल कैलेंडर का बदलना नहीं है—यह एक महत्वपूर्ण आत्मिक समय है। यह आलसी, लापरवाह या आत्मिक रूप से उदासीन रहने का समय नहीं है। यह प्रार्थना में खड़े होने, अपने जीवन को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार फिर से समर्पित करने, और आत्मिक युद्ध के लिए सजग रहने का समय है।

बाइबल में शुरुआतों का विशेष महत्व है। उत्पत्ति में, परमेश्वर ने सृष्टि की शुरुआत में व्यवस्था और क्रम स्थापित किया। निर्गमन में, परमेश्वर ने एक निश्चित समय में इस्राएल की छुटकारे की यात्रा शुरू की। और सुसमाचारों में, यीशु ने अपनी सेवकाई की शुरुआत प्रार्थना और उपवास से की (लूका 4:1–2)। इससे हमें यह सिखाया जाता है कि आत्मिक रूप से सही शुरुआत करना अत्यंत आवश्यक है।

इसी कारण, वर्ष की शुरुआत में हमें यह करना चाहिए:

प्रार्थना और उपवास में लगना (मत्ती 6:6, 17)
आराधना के लिए परमेश्वर के लोगों के साथ एकत्र होना (इब्रानियों 10:25) आत्मिक आलस्य और लापरवाही से सावधान रहना (1 पतरस 5:8)
आगामी वर्ष के लिए परमेश्वर की अगुवाई और दिशा खोजना (नीतिवचन 3:5–6)

उद्देश्य और आत्मिक सतर्कता के साथ नए वर्ष की शुरुआत करें

यदि दाऊद ने अपने सैनिकों के साथ युद्ध में जाने का निर्णय लिया होता—जैसा कि उस समय राजाओं के लिए अपेक्षित था—तो संभव है कि वह उस परिस्थिति से बच जाता जिसने उसे उसके सबसे बड़े नैतिक पतन तक पहुँचा दिया। उसकी कहानी आज भी हमारे लिए चेतावनी भी है और प्रोत्साहन भी, कि हम विशेषकर नए वर्ष जैसे महत्वपूर्ण मोड़ों पर आत्मिक रूप से सतर्क और सक्रिय रहें।

प्रभु हमारी सहायता करें कि हम नए वर्ष में यूँ ही बहते न चले जाएँ, बल्कि उद्देश्य, प्रार्थना और आत्मिक सामर्थ्य के साथ इसकी शुरुआत करें। जब हमें आत्मिक युद्ध की अग्रिम पंक्तियों में बुलाया गया है, तो हम पीछे न रहें। आइए, हम विश्वास में आगे बढ़ें और परमेश्वर के अनुग्रह तथा सुरक्षा पर पूर्ण भरोसा रखें।

शलोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp